आरंभिक समाज

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

प्रारंभिक मानव के शिकारी-संग्रहकर्ता जीवन को समझना तथा यह जानना कि वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों जाते थे। पत्थर के औजारों के निर्माण, आग की खोज तथा शिकार से खेती और पशुपालन की ओर हुए परिवर्तन का अध्ययन करना। यह समझना कि इन परिवर्तनों ने स्थायी बस्तियों और मानव सभ्यता की नींव कैसे रखी।

आरंभिक समाज का परिचय

मानव सभ्यता की शुरुआत लाखों वर्ष पहले हुई, जब प्रारंभिक मानव जंगलों, घास के मैदानों और नदी घाटियों में रहते थे। वे पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर थे और अपना भोजन शिकार करके तथा जंगलों से फल, कंद-मूल, बीज और अन्य खाद्य पदार्थ एकत्र करके प्राप्त करते थे। उस समय न तो स्थायी घर थे, न खेती और न ही आधुनिक तकनीक। उनका जीवन प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने और समूह में मिलकर रहने पर आधारित था।

समय के साथ मनुष्य ने अनेक महत्वपूर्ण खोजें कीं। पत्थर के औजार बनाना, आग का उपयोग करना तथा खेती की शुरुआत मानव इतिहास के ऐसे महत्वपूर्ण चरण थे जिन्होंने उसके जीवन को पूरी तरह बदल दिया। इन्हीं परिवर्तनों ने आगे चलकर स्थायी गाँवों और सभ्यताओं के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

शिकारी-संग्रहकर्ता का जीवन

प्रारंभिक मानव को शिकारी-संग्रहकर्ता कहा जाता है क्योंकि वे जंगली जानवरों का शिकार करके तथा जंगलों से फल, कंद-मूल, बीज, शहद और अन्य खाद्य पदार्थ एकत्र करके अपना जीवन बिताते थे। वे हिरण, जंगली पशुओं, पक्षियों और मछलियों का शिकार करते थे तथा समूह के सभी सदस्य भोजन जुटाने में सहयोग करते थे।

प्रारंभिक मानव एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रहते थे। जब किसी क्षेत्र में भोजन समाप्त हो जाता था तो उन्हें दूसरे स्थान पर जाना पड़ता था। जंगली पशु भी भोजन और पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे, इसलिए शिकारी भी उनका पीछा करते थे। विभिन्न ऋतुओं में अलग-अलग प्रकार के पौधे और फल उपलब्ध होते थे, जिसके कारण लोगों को मौसम के अनुसार स्थान बदलना पड़ता था।

> **प्राकृतिक संसाधनों की खोज:** जल की उपलब्धता भी उनके स्थान परिवर्तन का एक प्रमुख कारण थी। कई नदियाँ और तालाब वर्ष के कुछ समय सूख जाते थे, इसलिए उन्हें नए जल स्रोतों की खोज करनी पड़ती थी। वे प्रायः नदियों, जंगलों तथा ऐसे क्षेत्रों के पास रहते थे जहाँ पत्थर आसानी से मिल सकें ताकि औजार बनाए जा सकें। मध्य प्रदेश के भीमबेटका जैसे प्राकृतिक गुफा स्थल उन्हें वर्षा, गर्मी, ठंड और जंगली जानवरों से सुरक्षा प्रदान करते थे।

पत्थर के औजार और आग की खोज

पत्थर के औजार प्रारंभिक मानव के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण साधन थे। वे एक पत्थर को दूसरे पत्थर से टकराकर या उसके छोटे-छोटे टुकड़े निकालकर तेज धार वाले औजार बनाते थे। इनका उपयोग शिकार करने, लकड़ी काटने, पशुओं की खाल उतारने, भोजन तैयार करने तथा भाले और तीर जैसे हथियार बनाने में किया जाता था।

धीरे-धीरे मनुष्य ने आग का उपयोग करना सीख लिया। कुरनूल की गुफाओं से प्राप्त राख के अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि प्रारंभिक मानव आग का प्रयोग करता था। आग से उन्हें ठंड में गर्मी मिलती थी, रात में प्रकाश मिलता था और जंगली जानवरों से

सुरक्षा प्राप्त होती थी। आग पर भोजन पकाने से मांस अधिक स्वादिष्ट, सुरक्षित और आसानी से पचने योग्य बन गया। आग की खोज मानव विकास की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक मानी जाती है क्योंकि इससे जीवन पहले की तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक हो गया।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

लगभग 12,000 वर्ष पहले जलवायु में बड़े परिवर्तन हुए और अनेक क्षेत्रों में घास के मैदान विकसित होने लगे। गेहूँ, जौ और धान जैसे अनाज प्राकृतिक रूप से उगने लगे। प्रारंभिक मानव ने ध्यानपूर्वक देखा कि पौधे कैसे उगते हैं, बीज कैसे बनते हैं और फसल कैसे तैयार होती है।

धीरे-धीरे लोगों ने स्वयं बीज बोकर खेती करना सीख लिया। उन्होंने भेड़, बकरी, गाय और कुत्ते जैसे पशुओं को भी पालना भी शुरू किया। इससे उन्हें भोजन, सुरक्षा और खेती में सहायता मिलने लगी। खेती सफल होने के बाद लोगों को लगातार स्थान बदलने की आवश्यकता नहीं रही। वे उपजाऊ भूमि और जल स्रोतों के पास स्थायी गाँवों में रहने लगे। उन्होंने घर बनाए, अनाज संग्रह करना शुरू किया और आवश्यकता से अधिक उत्पादन होने पर वस्तुओं का आदान-प्रदान भी प्रारंभ किया।

घुमंतू जीवन से स्थायी बस्तियों तक

शिकार और भोजन संग्रह से खेती की ओर हुआ परिवर्तन मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था। स्थायी बस्तियाँ बनने के बाद लोगों ने मजबूत घर बनाए, नए व्यवसाय विकसित किए और बेहतर जीवन शैली अपनाई। मिट्टी के बर्तन बनाना, बुनाई, निर्माण कार्य तथा औजार निर्माण जैसे अनेक नए शिल्प विकसित हुए। स्थायी जीवन ने परिवारों और समुदायों के बीच सहयोग को भी बढ़ाया। लोगों ने वस्तुओं का आदान-प्रदान किया, नए नियम बनाए और संगठित समाज की नींव रखी। यही प्रारंभिक गाँव आगे चलकर बड़े नगरों और महान सभ्यताओं में परिवर्तित हुए।

आरंभिक समाज का महत्व

आरंभिक समाज का अध्ययन हमें मानव विकास की लंबी यात्रा को समझने में सहायता करता है। इससे पता चलता है कि बुद्धिमत्ता, परिश्रम और सहयोग के माध्यम से मनुष्य ने प्रकृति की चुनौतियों का सामना किया और धीरे-धीरे अपना जीवन बेहतर बनाया। यह अध्याय हमें यह भी बताता है कि आधुनिक जीवन की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ—जैसे खेती, पशुपालन, गाँवों का विकास और सामुदायिक जीवन—प्रारंभिक मानव की खोजों और अनुभवों पर आधारित हैं। इसलिए आरंभिक समाज का अध्ययन मानव सभ्यता की जड़ों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अभ्यास प्रश्न

1. प्रारंभिक मानव को शिकारी-संग्रहकर्ता क्यों कहा जाता है?
2. प्रारंभिक मानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों जाते थे?
3. पत्थर के औजार प्रारंभिक मानव के लिए कैसे उपयोगी थे?
4. आग की खोज से मानव जीवन में क्या परिवर्तन आए?
5. खेती की शुरुआत मानव इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ क्यों मानी जाती है?

उत्तर

- **उत्तर 1:** प्रारंभिक मानव जंगली जानवरों का शिकार करते थे तथा जंगलों से फल, कंद-मूल, बीज और अन्य खाद्य पदार्थ एकत्र करते थे, इसलिए उन्हें शिकारी-संग्रहकर्ता कहा जाता है।
- **उत्तर 2:** वे भोजन, पानी, जंगली पशुओं, मौसमी पौधों तथा औजार बनाने के लिए उपयुक्त पत्थरों की खोज में लगातार स्थान बदलते थे।
- **उत्तर 3:** पत्थर के औजारों का उपयोग शिकार करने, लकड़ी काटने, भोजन तैयार करने, पशुओं की खाल उतारने तथा हथियार बनाने में किया जाता था।
- **उत्तर 4:** आग से मनुष्य को प्रकाश, गर्मी, जंगली जानवरों से सुरक्षा तथा भोजन पकाने की सुविधा मिली, जिससे उसका जीवन अधिक सुरक्षित और बेहतर बन गया।
- **उत्तर 5:** खेती की शुरुआत से लोगों ने अपना भोजन स्वयं उगाना शुरू किया, स्थायी गाँव बसाए, पशुपालन अपनाया और संगठित समाज तथा सभ्यता के विकास की नींव रखी।